विषय : मुझे भी है एक सपना।

समृति की सूखी नदी

शाहरी शाम का माहोल। सूरज का आखरी रोशनी भी पेड़ के पत्तों के बीच से छलाँग लगाकर नदी में कूद लिया। दिन के नीले कपड़े में रात काली रंग गिरादी। चाँद अपने साथ लायी हुई चमकीले रत्नों से उस कपड़े को सजा दिया। उस शाहर के एक कोने में एक बड़ी घर से कोई रात की शरारतों को गौर से देख रहा है। उस व्यक्ति के चहरे पर पड़ी झुरियाँ रात से कई बातें कर रही है। दादाजी कुर्सी में बैठकर क्या सोच रहे होंगे? दादाजी अपने आप से बोलने लगा, "इस घर में कितने कमरे हैं? पर यहाँ रुकने के लिए तो कोई भी नहीं है। सबको विदेश राज्य ही पसंद है। मेरा बच्चों को भी ...." दादाजी का गला सूख गया। एक गिलास पानी लाने के लिए भी दादाजी को कोई नहीं। दादी तो दादाजी के पहले ही दूर जाकर उसको हरा दिया। दादाजी की आखें धुंधलाया।

तब ही दादाजी की फोन पर एक कॉल आया।

उसको कैसे उपयोग करना है? दादाजी को पता नहीं। सभी के पास एक है। इसलिए ही खरीदा था। पर उसे उपयोग करना सिखाने के लिए कोई नहीं। एक तरह से दादाजी कॉल उठा दी। "हैलो, पापा..." दादाजी की दिल में खुशी की लहरें छलाँग मारने लगा। दादाजी ने कहाँ, "बेटा सुधी... कैसे हो? छोटी क्या कर रहा है? सब ठीक-ठाक है ना?" कई साल बीतकर आने वाली कॉल की सभी हैरानी और खुशी उसकी शब्द से पता चल रहा था। सुधी ने इतना ही कहा, "मैं और राजू अगली दिन घर आ रहे हैं। मैं तोड़ी जल्दी में हूँ। ठीक है।" इतना कहकर उसने कॉल बंद कर दिया। दादाजी दुःखी नहीं, बल्कि खुश थी। उनका आँख चमकने लगा। उसने सफेद बाल हाथों से ठीक कर दिया और विचारों में मगन होने लगा। "आखिरकार मेरा सपना सफल होने जा रहा है। मुझे दो साल के बाद अपने पोते और बेटे से मिलने का अवसर मिल रहा है। मैं उनके साथ खूब सारा मस्ती करेंगा। उसने मुझे भूला नहीं। क्या वो कल सुबह ही यहाँ पहुँचेगा? पता नहीं।" ऐसे लाखों विचार दादाजी के मन में आ गया। फिर दादाजी

फिर दादाजी अपने पुरानी यादों में डूब गया। सुदी को जब बुखार आया था तो तब दादाजी ने नींद से जागकर उसकी देखभाल करती था। उन दोनों को दादा ने अपने दोनों हाथ में छाती से लगाकर सुलाता था। क्या अब भी वो अपने सांस का गंध पहचान पायेगा? दादाजी अपने विचारों को रोककर धीमी गती में उठकर अंदर गया। अपना घर एक ओर बार मस्ती-मजाक से भरने का सपना उन्होंने देखा। उस चुप-चाप सन्नाट्टा अब दादाजी को आदत पड़ गई। दादाजी धीरे-धीरे बिस्तर पर लेट गया और सो गया। दादाजी को अगला दिन क्या होगा? पता नहीं।

अगला दिन। दादाजी सुबह ही उठकर बाहर कुर्सी में बेटों का इंतज़ार करने लगा। चिड़ियाँ दादाजी की खुशी सालों बाद देखकर चिड़िया मीठी आवाज़ में गाने लगी। पेड़ खुशी से हवा के साथ नाचने लगी। तब ही एक कार बगीचे में दौडकर आ गया। दादाजी चमकीले आँखों के साथ बगीचे की तरफ़ देखा। अपना दो बेटों के साथ उनकी पत्नी और बच्चे भी आ रहे हैं। पर कुछ गड़बड़ है। सभी एक दूसरों से बात नहीं कर रहा। शैतान को आदा उस फोन नाम पर रखकर

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 642 Participant Code: 315

सुदी, राजू और उनके पत्नी धीरे-धीरे आ रहा है। पोता-पोती तो विडियो गेम खेल रहे हैं। सब धरती में नहीं किसी दूसरी दुनिया में हैं। उन सबके चहरों से पता चलता है कि उन सबके समृति के नदी सुखा है। उनमें दादाजी का कोई निशाना भी नहीं। वो घर के बाहर रहकर कहा, "पापा हम आज ही लौटेंगे। हमें कुछ पैसे की ज़रूरत है। तो सोचा की अपनी प्रोपर्टी को भाग कर देता है। हम शाम शायद तीन बजे उसके लिए रजिस्टर अफ़ीस जा रहा है। आपकी भी जरूरत है। तो तैयार रहो।" यह सब एक सांसा में कहकर सुदी राजू को देखा और कार में घुसने का निशाना दी। तब ही दादाजी ने कहा, "इतना जल्दी क्यों? यहाँ आओ। थोड़ी देर आराम करके जाओ। मैं अभी उसका इंतज़ाम कर देता हूँ"। बिजली की तेज़ी में राजू का पत्नी बोला "मुझे नहीं रहना इस, टूटा-फूटा घर में।" और कार के अंदर घुस गया। फिर एक-एक करके उन सभी ने जगह खाली कर दी।

दादाजी के दिल में एक सुई घुसा और

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

कथा ~~मैं~~ मेरे बच्चों को ऐसा करने को सिखाया था? उसकी कोने से खून निकल आ गया। ~~उसकी~~ दादाजी को समज आ गया कि उनके दिल में ~~क~~ दादाजी मरकर सालों बीत ~~गये~~ गए। पर अब भी दादाजी के दिल में वह सब ~~जीव~~ जीवित है। दादाजी की समृति की नदी में ~~ड~~ सिर्फ उन लोग ही है। दादाजी अपने आप से कहा, "कहीं भी जाओ, मेरा आशिर्वाद तुम लोगों के साथ जीवन-भर ~~हो~~ होगा।" पर दादाजी के दिल ने उनसे कहा, "तुम्हें भी एक सपना था। पर वो टूट गया। हमारा बच्चा है ना? उन्हें उनके ~~ख~~ खुशी से जीने देते हैं।" दादाजी के आँखों से पानी का एक धारा ~~निक~~ निकला। वह अपने हाथ से पोछकर दादा अंदर ~~गए~~ गए।

तीन बजे हो ~~गए~~ गए। दादाजी अच्छे कपड़े पहनकर बाहर बैठा। एक कार आ गया और उसके पीछे-पीछे एक ओटो भी। जब दादाजी कार के पास गए तो पोती ने कहा, "~~द~~ दादा, आप पीछे ओटो में बैठ जाइए।" और उसके पास की जगह को 'भरा' दिखाने का कोशिश की। दादाजी चुपचाप पीछे ओटो में बैठ गया। फिर अपनी गोदी में उठाने के लिए लड़ने वाली पोती का

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

चित्र मन में आ गया। अब तो वह बड़ी हो गई है न? कुछ ही देर में ओफीस आ गया। दादाजी बिना-मन से कागज़ पर हस्ताक्षर लिख दिया। हाथ कांप रहा था उनका। पर अपने बेटे की चेहरे पर पड़ी हँसी उनको खुश कर दिया। राजु कहा, "अब घर हो गया मेय। पापा आप कहाँ रहेंगे?" दादाजी ने कहा "घर में।" राजु ने कहा "नहीं, नहीं उस घर को खरीदने पहले ही लोग आ गया।" दादाजी उदास होकर कहाँ, "फिर, मैं कहाँ रहूँगा?" सुधी ने झट से कहा, "आश्रम में! पहले ही मैं आश्रम के लोगों से कहाँ हूँ। कपड़ों - या किसी और चीज़ की जरूरत नहीं। आप सिर्फ आटो में बैठिए और आश्रम में जाइए। मुझे बकवाज़ बोलने का समय नहीं। समझो!" दादाजी अपने सिर पर हाथ रखा। फिर ओटो के पास चला गया। "अपनी बेटे के लिए है न! कोई बात नहीं" उसने अपने आप से कहा। फिर एक ओर बार अपने बेटों को देखकर ओटो में बैठ गया। उनका हृदय टूट रहा था। मैं जिस बच्चे को अपनी जीवन से ज्यादा प्यार

करती थी उसने मेरा उपेक्षा की । जब ओढ़ा रुका तो उन्होंने आश्रम की ओर अपनी भारी पैर को उठाके चलने लगा । उन्होंने एक कोने में बैठा । बादल गर्जने लगा । काली बादल सफेद रंग के आगे आया । बारिश होने लगा । प्रकृति बारिश के रूप में दादाजी को आश्वास दिया । दादाजी हँसा । उन्होंने थकावट से नंगे फर्श पर लेट गया । तुरंत उनके नींद आया । अब भी उनके कान और मन में उनके बेटे "पापा-पापा" कहकर उनके आगे दौड़ आने का चित्र है । उन्होंने आँखें बंद किया । वह उनका अखरी नींद था । पर अब भी उनके दिल में उनके बेटों का चित्र था ।